महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
जनसंपर्क कार्यालय
PUBLIC RELATIONS OFFICE

हिंदी को भविष्य की भाषा विकसित करने का दायित्व हिंदी विश्वविद्यालय के कंधे पर : पद्मश्री प्रो. हरमहेंद्र सिंह बेदी

वर्धा, दि. 08 जनवरी 2025: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के 28वें स्थापना दिवस समारोह में बतौर मुख्य अतिथि संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय की कार्य-परिषद् सदस्य पद्मश्री प्रो. हरमहेंद्र सिंह बेदी ने

कहा कि हिंदी को भविष्य की भाषा के रूप में विकसित करने का बहुत बड़ा दायित्व महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय

हिंदी विश्वविद्यालय पर है। विश्वविद्यालय का 28 वाँ स्थापना दिवस बुधवार, 08 जनवरी को मनाया गया। इस उपलक्ष्य में लक्ष्मीबाई केळकर छात्रावास का लोकार्पण पद्मश्री प्रो. हरमहेंद्र सिंह बेदी के कर कमलों से किया गया।

कस्तूरबा सभागार में स्थापना दिवस का मुख्य कार्यक्रम कुलपति प्रो. कृष्ण कुमार सिंह की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस दौरान मुख्य अतिथि पद्मश्री प्रो. हरमहेंद्र सिंह बेदी, विशिष्ट अतिथि ऑक्सफोर्ड

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत
ई-मेल/E-mail: buddhadassmirge@hindivishwa.ac.in वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org
दूरभाष :+91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305

विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के आचार्य डॉ. इमरै बंघॉ, कार्य-परिषद् के सदस्य गोविंद सिंह, प्रो. कृपाशंकर चौबे, प्रो. गोपाल कृष्ण ठाकुर, डॉ. रामानुज अस्थाना एवं कुलसचिव प्रो. आनन्द पाटील मंचासीन थे। इस

अवसर पर मंचस्थ अतिथियों द्वारा 'विदेशी हिंदी सेवी' पर केंद्रित विश्वविद्यालय के वर्ष 2025 के कैलेंडर का विमोचन किया गया।

मुख्य अतिथि पद्मश्री प्रो. हरमहेंद्र सिंह बेदी ने हिंदी महत्ता को प्रतिपादित करते हुए कहा कि इस देश को दो शक्तियां अखंड भारत बनाती हैं एक जीटी रोड और दूसरी हिंदी। विश्वभर में हिंदी की बात हो रही है। हिंदी के

बिना गुजारा नहीं है। पूरी दुनिया हिंदी के साथ-साथ गांधीजी के विचारों का अनुसरण करना चाहती है। गांधी और अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की पहचान विश्व पटल पर बन रही है। हिंदी एक आर्थिक शक्ति और व्यापार की भाषा बनी है। उन्होंने विश्वास जताया कि जिस प्रकार विश्व में नालंदा और तक्षशिला विश्वविद्यालयों का

नाम लिया जाता है उसी प्रकार भविष्य में हिंदी विश्वविद्यालय का नाम लिया जाएगा और यह विश्वविद्यालय विश्वभर में ज्ञान का दीपक जलाएगा।

विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. इमरै बंघॉ ने कहा कि हिंदी मुगल साम्राज्यकी संपर्क भाषा रही है। हिंदी का हिंदुस्तान में विशेष स्थान है। उन्होंने हिंदी की बढ़ती स्वीकार्यता और प्रभाव पर अपनी बात रखते हुए हिंदी के सीमित होने पर खेद भी व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि हम हिंदी का सम्मान तो करते हैं परंतु इस्तेमाल नहीं करते। लोग अंग्रेज़ी के पीछे दौड़ने लगे हैं और लोकभाषाओं को भूल रहे हैं। मैं भले ही हंगरी का निवासी हूँ परंतु मुझे विगत 38 साल से हिंदी के प्रति आत्मीयता है। हिंदी से भावनात्मकता मिलती है और मैं इसे भारत में बोलता हूँ तब मैं घर जैसा महसूस करता हूँ। उन्होंने कहा कि भाषाओं को जानने से भाषाओं की सीमाओं को विस्तार दिया जा सकता है।

कार्य-परिषद् के सदस्य गोविंद सिंह ने कहा कि इस विश्वविद्यालय से शुरुआती दौर से जुड़ा हूँ। यह विश्वविद्यालय महज 28 वर्ष का यानी शैशव अवस्था में है। हमें लंबी यात्रा करनी है। शिक्षक और विद्यार्थियों के माध्यम से यह विश्वविद्यालय ऐसा शैक्षिक काम करेगा जिसे भविष्य याद रखेगा। अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने पद्मश्री प्रो. बेदी और डॉ. इमरै बंघॉ के वक्तव्य का संदर्भ देते हुए कहा कि हिंदी हमारा घर है। यह हमारी घर की भाषा है। हमें सभी भारतीय भाषाओं के साथ संवाद करते हुए आगे बढ़ना चाहिए, हिंदी विश्वविद्यालय का यह मूल उद्देश्य भी है। स्थापना दिवस पर उन्होंने विश्वविद्यालय परिवार को शुभकामनाएं दी और कहा कि हमें विश्वविद्यालय को आगे बढ़ाने का संकल्प लेना चाहिए।

स्वागत भाषण में प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल ने कहा कि सन् 1878 में भारतेन्दु ने हिंदी विश्वविद्यालय का सपना देखा। उनके सपने के अनेक वर्षों बाद हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। अब हमें विश्वविद्यालय को मेहनत और लगन से कार्य कर आगे बढने का संकल्प लेना चाहिए। कार्यक्रम में पद्मश्री प्रो. बेदी और डॉ. इमरै बंघॉ को कुलपति प्रो. सिंह के हाथों हिंदी सेवी सम्मान से नवाज़ा गया। सम्मान पत्र का वाचन डॉ. रामानुज अस्थाना ने किया। विश्वविद्यालय का एक वर्ष का प्रगति प्रतिवेदन प्रो. गोपाल कृष्ण ठाकुर ने प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि 08 विद्यापीठ, 28 विभाग और 03 केंद्र के माध्यम से विश्वविद्यालय का विस्तार हुआ है। पिछले वर्ष भर में अनेक अकादमिक गतिविधियों का आयोजन कर विश्वविद्यालय ने अपनी शैक्षिक प्रगति की दिशा में कदम बढ़ाए हैं।

स्थापना दिवस का प्रारंभ गांधी हिल्स पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी तथा बोधिसत्व बाबासाहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर समता भवन में डॉ. आंबेडकर की प्रतिमा पर पुष्पाजंलि अर्पित कर किया गया। इसके पश्चात प्रथमा भवन के प्रांगण में कुलपति प्रो. सिंह द्वारा विश्वविद्यालय का ध्वज फहराया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ दीप-

प्रज्ज्वलन, कुलगीत एवं गांधीजी के फोटो पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया। कार्यक्रम का संचालन कार्य-परिषद् के सदस्य जनसंचार विभाग के अध्यक्ष प्रो. कृपाशंकर चौबे ने किया। कुलसचिव प्रो. आनन्द पाटील ने आभार माना। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया। इस अवसर पर राष्ट्र सेविका समिति, नागपुर की प्रांत संयोजिका रोहिणीताई आठवले, वर्धा के स्वयंसेविका अपर्णाताई हरदास, उज्वलाताई केळकर, अरुणाताई माहेश्वरी, अधिष्ठातागण, विभागाध्यक्ष, अधिकारी, अध्यापक, कर्मचारी सहित बड़ी संख्या में शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

हिंदी ही भविष्यातील भाषा म्हणून विकसित करण्याची जबाबदारी हिंदी विश्वविद्यालयाच्या खांद्यावर : पद्मश्री प्रो. हरमहेंद्र सिंह बेदी

वर्धा, दि. 08 जानेवारी 2025: महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयाच्या 28 व्या स्थापना दिन समारंभात प्रमुख पाहुणे म्हणून संबोधित करताना विश्वविद्यालयाचे कार्यकारी परिषद सदस्य, पद्मश्री प्रो. हरमहेंद्र सिंह बेदी म्हणाले की हिंदीला भविष्यातील भाषा म्हणून विकसित करण्याची मोठी जबाबदारी महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विद्यापीठावर आहे. विश्वविद्यालयाचा 28 वा स्थापना दिन बुधवार, 08 जानेवारी रोजी साजरा करण्यात आला. यावेळी लक्ष्मीबाई केळकर वसतिगृहाचे उद्घाटन पद्मश्री प्रो. हरमहेंद्र सिंह बेदी यांच्या हस्ते करण्यात आले.

कस्तुरबा सभागृहात स्थापना दिनाचा मुख्य कार्यक्रम कुलगुरू प्रो. कृष्ण कुमार सिंह यांच्या अध्यक्षतेखाली आयोजित करण्यात आला होता. यावेळी प्रमुख पाहुणे पद्मश्री प्रो. हरमहेंद्र सिंह बेदी, विशेष अतिथी ऑक्सफर्ड विश्वविद्यालयाच्या हिंदी विभागाचे प्राध्यापक डॉ. इमरै बंघॉ, कार्य-परिषद सदस्य गोविंद सिंह, प्रो. कृपाशंकर चौबे, प्रो. गोपाल कृष्ण ठाकूर, डॉ. रामानुज अस्थाना आणि कुलसचिव प्रो. आनन्द पाटील व्यासपीठावर उपस्थित होते. यावेळी व्यासपीठावर पाहुण्यांच्या हस्ते 'विदेशी हिंदी सेवी' वर केंद्रित विश्वविद्यालयाच्या 2025 सालच्या दिनदर्शिकेचे प्रकाशन करण्यात आले.

प्रमुख पाहुणे पद्मश्री प्रो. हरमहेंद्र सिंह बेदी हिंदीचे महत्त्व सांगताना म्हणाले की दोन शक्ती या देशाला अखंड भारत बनवतात. एक जीटी रोड आणि दुसरी हिंदी. हिंदीशिवाय पर्याय नाही. संपूर्ण जगाने हिंदीसह गांधीजींच्या विचारांचे अनुसरण केले पाहिजे. गांधी आणि आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयाची ओळख जागतिक पटलावर निर्माण होत आहे. हिंदी ही आर्थिक सत्ता आणि व्यापाराची भाषा बनली आहे. जगात ज्याप्रमाणे नालंदा आणि तक्षशिला विद्यापीठांचे नाव घेतले जाते, त्याचप्रमाणे भविष्यातही हिंदी

विश्वविद्यालयाचे नाव घेतले जाईल आणि हे विश्वविद्यालय जगभर ज्ञानाचा दीप प्रकाशमान करेल असा विश्वास त्यांनी व्यक्त केला.

विशेष अतिथी डॉ. इमरै बंघॉ म्हणाले की हिंदी ही मुघल साम्राज्याची संपर्क भाषा राहिली आहे. भारतात हिंदीला विशेष स्थान आहे. हिंदीची वाढती स्वीकृती आणि प्रभाव यावर भाष्य करताना त्यांनी हिंदीच्या मर्यादेबद्दल खंतही व्यक्त केली. ते म्हणाले की आम्ही हिंदीचा आदर करतो पण त्याचा वापर करत नाही. लोक इंग्रजीच्या मागे धावू लागले आहेत आणि लोकभाषा विसरत चालले आहेत. मी हंगेरीचा रहिवासी असलो तरी गेल्या ३८ वर्षांपासून मला हिंदीबद्दल आत्मीयता आहे. हिंदीमध्ये भावनात्मकता मिळते आणि जेव्हा मी ते भारतात बोलतो तेव्हा मला घरी असल्या सारखे वाटते. ते म्हणाले की भाषा जाणून घेऊन भाषांच्या सीमा वाढवता येतात.

कार्यकारी परिषद सदस्य गोविंद सिंहयांनी सांगितले कीया विश्वविद्यालयाशी सुरुवातीपासूनच जोडलो आहे. हे विश्वविद्यालय केवळ 28 वर्षांचे आहे, म्हणजे बालपणात. आम्हाला खूप लांबचा प्रवास करायचा आहे. शिक्षक व विद्यार्थ्यांच्या माध्यमातून हे विश्वविद्यालय भविष्यात स्मरणात राहील असे शैक्षणिक कार्य करेल. अध्यक्षीय भाषणात कुलगुरू प्रो. कृष्ण कुमार सिंह पद्मश्री प्रो. बेदी आणि डॉ. इमरै बंघॉ यांच्या वक्तव्याचा संदर्भ देत म्हणाले की हिंदी हे आमचे घर आहे. सर्व भारतीय भाषांशी संवाद साधून आपण पुढे जायला हवे, हाही हिंदी विश्वविद्यालयाचा मूळ उद्देश आहे. स्थापना दिनानिमित्त त्यांनी विश्वविद्यालय परिवाराला शुभेच्छा देत विश्वविद्यालयाला पुढे नेण्याची प्रतिज्ञा घेतली पाहिजे असे सांगितले.

स्वागतपर भाषणात प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल म्हणाले की, 1878 मध्ये भारतेंदू यांनी हिंदी विश्वविद्यालयाचे स्वप्न पाहिले. त्यांच्या स्वप्नानंतर अनेक वर्षांनी हिंदी विश्वविद्यालयाची स्थापना झाली. आता आपण कठोर मेहन आणि परिश्रम देऊन विश्वविद्यालयाला पुढे नेण्याचा संकल्प केला पाहिजे. कार्यक्रमात पद्मश्री प्रो. बेदी आणि डॉ. इमरै बंघॉ यांना कुलगुरू प्रो सिंह यांच्या हस्ते हिंदी सेवी सन्मान प्रदान करण्यात आला. सन्मानपत्राचे वाचन डॉ. रामानुज अस्थाना यांनी केले. विश्वविद्यालयाचा एक वर्षाचा प्रगती अहवाल प्रो. गोपाल कृष्ण ठाकूर यांनी सादर केला. ते म्हणाले की विश्वविद्यालयाचा विस्तार 08 विद्यापीठ, 28 विभाग आणि 03 केंद्रांद्वारे होत आहे. गेल्या वर्षभरात अनेक शैक्षणिक उपक्रमांचे आयोजन करून विश्वविद्यालयाने आपल्या शैक्षणिक प्रगतीकडे पाऊल टाकले आहे.

स्थापना दिनाची सुरुवात गांधी हिल्सवर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व बोधिसत्व बाबासाहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर समता भवन येथील डॉ. आंबेडकरांच्या प्रतिमेस पुष्प अर्पण करून करण्यात आली. यानंतर प्रथमा भवनाच्या प्रांगणात कुलगुरू प्रो. सिंहयांच्या हस्ते विश्वविद्यालयाचा ध्वज फडकविण्यात आला. कार्यक्रमाची

सुरुवात दीपप्रज्ज्वलन, कुलगीत आणि गांधीजींच्या फोटोला पुष्प अर्पण करून करण्यात आली. कार्यक्रमाचे संचालन कार्यकारी परिषद सदस्य व जनसंचार विभागाचे अध्यक्ष प्रो. कृपाशंकर चौबे यांनी केले. कुलसचिव प्रो. आनन्द पाटील यांनी आभार व्यक्त केले. राष्ट्रगीताने कार्यक्रमाची सांगता झाली. यावेळी राष्ट्र सेविका समिती नागपूरच्या राज्य संयोजिका रोहिणीताई आठवले, वर्ध्याच्या स्वयंसेविका अपर्णाताई हरदास, उज्वलाताई केळकर, अरुणाताई माहेश्वरी, अधिष्ठाता, विभागप्रमुख, अधिकारी, शिक्षक, कर्मचारी व शोधार्थी व विद्यार्थी मोठ्या संख्येने उपस्थित होते.